

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान,

खण्डवा रोड, इंदौर- 452001

फा.क्र. प्रेस एवं पब्लिसिटी/प्रेस मीडिया/ 2024

दिनांक: 09.02.2024

विषय: सोयाबीन में रोग प्रतिरोधिता में वृद्धि हेतु भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मंथन सत्र

सोयाबीन अनुसंधान और विकास गतिविधियों के समन्वय के लिए समर्पित एक प्रमुख तिलहन संस्थान, आईसीएआर-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान ने रोगों से सोयाबीन की उपज में कमी की समस्याओं का प्रबंधन करने के लिए सोसाइटी फॉर सोयाबीन रिसर्च एंड डेवलपमेंट के साथ संयुक्त रूप से "सोयाबीन में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने की रणनीतियाँ" पर अंतर्राष्ट्रीय विचार-मंथन सत्र आयोजित किया। इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने भाग लेकर जानकारी साझा की।

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ संजीव गुप्ता ने भी भाग लेकर संबोधित किया जबकि मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के शिक्षा एवं फसल विभाग के भूतपूर्व उपमहानिदेशक डॉ सत्य प्रकाश तिवारी ने मार्गदर्शन दिया। इस चर्चासत्र के संयोजक संस्थान के निदेशक डॉ कुंवर हरेन्द्र सिंह थे जबकि आयोजन सचिव डॉ महावीर प्रसाद शर्मा एवं डॉ मिलिंद रत्नापरखे ने योगदान दिया।

मंथन सत्र के प्रारंभ में, आईआईएसआर के निदेशक और सोयाबीन अनुसंधान एवं विकास सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. के.एच. सिंह ने इंदौर में और ऑनलाइन मोड के माध्यम से सत्र में भाग लेने वाले गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए पने भाषण में विभिन्न रोगों के संक्रमण द्वारा सोयाबीन की उपज में ठहराव और उससे (25-30%) तक हानि होने पर अपनी चिंता व्यक्त की।

अमेरिका की इंडियाना स्टेट यूनिवर्सिटी, के जीव विज्ञान विभाग के प्रतिष्ठित प्रोफेसर रोजर इन्स ने "डिकॉय इंजीनियरिंग" नामक तंत्र का उपयोग करके भारतीय सोयाबीन की प्रमुख बीमारियों के लिए प्रतिरोध प्रदान करने के बारे में बात की। उनके अनुसार, इस तरह की नई ट्रांसजेनिक तकनीक सोयाबीन में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद कर सकती है। डॉ. ऐनी ई. डोरेंस, प्रोफेसर एमेरिटस, प्लांट पैथोलॉजी विभाग, ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए ने बेहतर सोयाबीन के निर्माण पर व्याख्यान दिया। उनके अनुसार सोयाबीन की बीमारियों जैसे फाइटोफ्थोरा सोजे, सोयाबीन रस्ट, स्केलेरोटिनिया स्टेम रॉट, डायपोर्थ स्टेम कैंकर और सोयाबीन सीडिंग डैम्पिंग ऑफ पर चर्चा की एवं फाइटोफ्थोरा रोग के लिए पैथोटाइप लक्षण वर्णन और प्रतिरोधी प्रजनन कार्यक्रम पर चल रहे शोध कार्यक्रमों पर अधिक जोर देना चाहिए।

प्रोफेसर के. मरेडिया, निदेशक (अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम-कृषि एवं प्राकृतिक संसाधन), मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए ने भारत के साथ कृषि एवं प्राकृतिक संसाधन अनुसंधान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर चर्चा की तथा मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में भारतीय सोयाबीन वैज्ञानिकों के भविष्य में अनुसंधान सहयोग और क्षमता विकास निर्माण के लिए इच्छा दिखाई। डॉ. सारा थॉमस-शर्मा, सहायक प्रोफेसर, प्लांट पैथोलॉजी एवं क्रॉप फिजियोलॉजी विभाग, लुइसियाना स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए ने सोयाबीन रोगों के एकीकृत प्रबंधन में सुधार के लिए महामारी विज्ञान संबंधी ज्ञान अंतराल को संबोधित किया।

जापान की जिरकास संस्था के विशेषज्ञ तथा जैविक संसाधन और कटाई उपरांत प्रभाग के डॉ. नाओकी यामानाका के अनुसार, एशियाई सोयाबीन रस्ट की समस्या को हल करने के लिए रस्ट प्रतिरोध के लिए प्रजाति-विशिष्ट प्रजनन प्रभावी और किफायती हो सकता है। डॉ. वी.के. बरनवाल, राष्ट्रीय प्रोफेसर, प्लांट पैथोलॉजी प्रभाग, भारतीय

कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने भारत के विभिन्न सोयाबीन वायरल रोगों का पता लगाने और उनके निदान तथा उनके रोग प्रबंधन रणनीतियों के बारे में बात की।

इस अवसर पर, ICAR-IISR के निदेशक डॉ. के.एच. सिंह ने अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत आयोजित बहु-स्थानीय परीक्षणों में प्राप्त 2.5 टन/हेक्टेयर तक की उपज के स्तर के बारे में जानकारी दी। उनके अनुसार, राइजोक्टोनिया एरियल ब्लाइट, एन्थ्रेक्नोज, चारकोल रॉट जैसे फंगल रोगों के संक्रमण के अलावा पीला मोजेक रोग सोयाबीन की परिपक्वता अवधि के दौरान बढ़ जाता है, जिससे वास्तविक उपज में कमी आती है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह विचार-मंथन सत्र प्रबंधन विकल्पों के लिए अंतर्दृष्टि विकसित करने और इन मुद्दों को सुलझाने हेतु किये जा रहे अनुसंधान कार्यक्रम को गति देने में सहायता करेगा।

मंथन चर्चा सत्र के सह-अध्यक्ष डॉ. संजीव गुप्ता ने संतोष व्यक्त किया। उनके अनुसार देश को प्रोटीन निर्माण का केंद्र बनाने की दिशा में प्रगति होगी, जिसके लिए सोयाबीन सबसे अच्छा विकल्प है तथा इसकी उत्पादकता में वृद्धि नीति निर्माताओं के सपनों को साकार करेगी। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. सत्य प्रकाश तिवारी ने सोयाबीन वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे सोयाबीन कृषक समुदाय के समग्र लाभ के लिए बुनियादी तथा मौलिक अनुसंधान पर अनुसंधान कार्यक्रमों के अतिरिक्त मैदानी समस्याओं को सुलझाने वाले अनुसंधान पर भी ध्यान केन्द्रित करें।

सोयाबीन रोगों के महत्व को समझते हुए डॉ. तिलक राज शर्मा, माननीय उप महानिदेशक, फसल विज्ञान, आईसीएआर, नई दिल्ली ने वैज्ञानिकों से सोयाबीन में जैविक तनाव के प्रबंधन पर एक बड़ी परियोजना शुरू करने पर जोर दिया। उन्होंने सोयाबीन वैज्ञानिकों से जीडब्ल्यूएस, क्यूटीएल मैपिंग, हैप्लोटाइप आधारित प्रजनन और मेजबान रोगजनक अंतःक्रिया अध्ययन जैसे नवीन अनुसंधान दृष्टिकोणों का उपयोग करने का आह्वान किया। उपमहानिदेशक ने नवनिर्मित मंडप परिश्र का भी उद्घाटन किया तथा एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन केंद्र को देश की जनता के लिए समर्पित कर लोकार्पण किया।

अंत में, अध्यक्ष, सह-अध्यक्ष और मुख्य अतिथि द्वारा समापन टिप्पणियों के साथ सत्र समाप्त हो गया। कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. एमपी शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।



